विकास के बदलते परिवेश में वैश्वीकरण की भूमिका

डॉ0 शक्ति सिंह*

सभ्यता के प्रारम्भ से ही विज्ञान मानव का सबसे बड़ा सहयोगी रहा है। प्रगति के अनेक सोपानों का निर्माण करते हुए इसने मानव को आदिम गुफाओं की स्थिति से चंन्द्रमा तक पहुँचाया है, निश्चय की यह बहुत लम्बी यात्रा है। इस समय विज्ञान मानव जीवन का अभिन्न अंग है। मानव प्रयास के जिन–जिन क्षेत्रों की ओर हम दृष्टिपात करते हैं, हमें विज्ञान की अमिट छाप देखने को मिलती है वास्तव में ऐसे जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती जहाँ वैज्ञानिक अनुसंधानों के लाभ न मिल रहे हों। हमें भविष्य इसीलिए सुनहरा दिखाई पड़ा रहा है क्योंकि हमारा वर्तमान लगातार बढ़ते हुए वैज्ञानिक ज्ञान से सम्पन्न है एक समय जिन चीजों की कोरी कल्पना माना जाता था, विज्ञान की मद्द से आज उन्हें वास्तविकता के रूप में परिणित किया जा चुका है। इन सब महान उपलब्धियों के लिए अतीत और वर्तमान के सभी वैज्ञानिक पूरे समाज की श्रद्धा और प्रशंसा के पात्र हैं।

आज का युग संचार व प्रौद्योगिकीय का युग है, जहाँ उदारीकरण, नीजिकरण, वैश्वीकरण की हवा बह रही है इसी हवा में वैश्वीकरण पूरी संक्रियता के साथ पूरे विश्व में विस्तारित होता जा रहा है और इसी के कारण आज पूरा विश्व एक छोटी सी दुनियाँ में सिमट गया है वैश्वीकरण के कारण हम एक दूसरे के नजदीक आ गये है तथा सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, व्यापारिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में हम एक दूसरे से परिचित हुए हैं इसी परिचय की वजह से आर्थिक क्रियाओं में परस्पर निर्भरता बढ़ी। अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग तथा विदेशी व्यापार को प्रोत्साहन मिला। वैश्वीकरण को अच्छी दृष्टि से देखने वाले इसे विश्व के लिए पश्चिमी सभ्यता का योगदान मानते हैं यूरोप में महत्वपूर्ण विकास का एक रोचक इतिहास है। सबसे पहले यहाँ पुनर्जागरण हुए फिर यहाँ वह दार्शनिक लहर आई जिसमें मानव कल्याण का आधार विज्ञान और तर्क को माना गया, इसके बाद यहाँ औद्योगिक क्रान्ति हुई इन सबके परिणाम स्वरूप पश्चिम में लोगों के रहन–सहन में उल्लेखनीय बदलाव आया। इस महत्वपूर्ण उपलब्धि का विस्तार आज पूरे विश्व में हो रहा है।

वैश्वीकरण एक खुली बहुआयामी प्रक्रिया है जिसके द्वारा विश्व की विभिन्न अर्थव्यवस्था का समन्वय किया जाता है जिसे वस्तुओं और सेवाओं प्रौद्योगिकीय एवं पूंजी के मध्य प्रवाह (सम्बन्ध) हो सके। अर्थात् राष्ट्रीय घरेलू अर्थ व्यवस्था का विश्व अर्थव्यवस्था के साथ जुड़ना। वैश्वीकरण विश्वव्यापी व्यापार विधा के रूप में एक नवीन अभिगम है किन्तु इसकी जड़े द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के पाँच दशेां में निहित है। 1960 के दशक का समाज वैज्ञानिकों और नीति नियोजकों ने वृद्धि काल के रूप में देखा, 1970 को आधुनिकीकरण, 1980 के दशक को सामाजिक रूपान्तरण और विकास तथा 1990 के दशक को संवहनीय विकास के रूप में व्याख्यायित किया और अन्ततः इस दशक के उत्तरार्द्ध अर्थात् बीसवीं सदी के समापन के दौर में उदारीकरण और नीजिकरण पर विशेष बल देते हुए वैश्वीकरण का उद्घोष किया।

वैश्वीकरण को पूर्णतः पश्चिमी मूल की घटना के रूप में पहचान से निपटने में हम लोगों की पश्चिम विरोध के साथ–साथ इसके पक्ष में भी हो रहे समकालीन लेखनों के प्रति संदेही होना होगा। निश्चित तौर पर पुर्नजागरण, ज्ञानोदय एवं औद्योगिक क्रान्ति बहुत की महत्वपूर्ण उपलब्धि थी और ये मुख्य रूप से यूरोप में और बाद में अमेरिका में हुई इसके अलावा विश्व के अन्य भागों पर भी इसका प्रभाव पड़ा। ये सिर्फ पश्चिमी सभ्यता तक ही सीमित नहीं रही। अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक योजना संस्थान, यूनेस्कों के निदेशक **डॉ0 गुडमंड हर्नेस** ने भूमण्डलीकरण को मानव सभ्यता के विकास के साथ–साथ चलने वाली प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया है। उनके अनुसार– ''सामान्य रूप से भूगण्डलीकरण मानव समाज और संस्कृति के विस्तार की प्रक्रिया को अभिव्यक्त करता है।'' **ब्लैकवेल डिक्शनरी ऑफ सोशियोलॉजी (1995)** के अनुसार – भूमण्डलीकरण वह प्रक्रिया है, जिसके अन्तर्गत विभिन्न समाजों का सामाजिक जीवन राजनीतिक एवं व्यापारिक क्षेत्रों से लेकर संगीत, वेशभूषा एवं जन–मीडिया के क्षेत्रों तक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अत्यन्त द्रुतगति से प्रभावित हुआ है। **मानव विकास रिपोर्ट 1999** के अनुसार– भूमण्डलीकरण केवल अर्थव्यवस्था को एकीकृत करने की प्रक्रिया नहीं है। यह संस्कृति, प्रौद्योगिकी और शासन व्यवस्था को भी जोड़ना है। यह नये बाजार, विदेशी मुद्रा विनिमय, विश्वपूंजी बाजार, नयी मशीनें, इण्टरनेट, सेलफोन सेवा, संचार सेवा, नये विश्व संगठन, राष्ट्रीय सरकारों पर विश्व नियंत्रण के लिए विश्व व्यापार संगठन, अनेक देशों के आर्थिक प्रतिष्ठानों को बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के बीच सहयोग, बौद्धिक संपदा की सुरक्षा, व्यापार और सेवा क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय करार को प्रोत्साहित कर रहा है इससे पता चलता है कि भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया में अधिमान्य संकल्पनाओं से भी अधिक विश्व की सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था को बदलने की क्षमता है।

आधुनिक संदर्भ में वैश्वीकरण का आशय बाजारोन्मुख अर्थतंत्र आधारित व्यावसायिक–व्यापारिक क्रियाकलापों के वैश्वीकरण प्रसरण से है इस अवधारणा के जनक देशों का मानना है कि व्यावसायिक–व्यापारिक विस्तार से क्षेत्रिय स्तर पर आर्थिक सामाजिक उत्थान द्वारा आर्थिक सामाजिक विषमता को यथासम्भव कम किया

* रीडर, समाजशास्त्र, गनपत सहाय पी0जी0 कालेज, सुलतानपुर

जा सकता है। क्योंकि इससे विपन्न क्षेत्रों को प्रोत्साहन मिलेगा। वास्तव में विकसित देश चाहते हैं कि उनके विकासवाद के मॉडल को विश्व स्तर तक अपनाया जाय ताकि जहाँ एक ओर उनकी श्रेष्ठता स्थापित होगी वहीं विकासशील देशों को संसाधनों एवं बाजारों के दोहन में सुविधा बढ़ जायेगी। उल्लेखनीय है कि राजनीतिक एवं व्यापारिक वैश्वीकरण की भूतकालिक घटनाएँ सुखदायी नहीं रही है व्यापारिक विस्तार में अन्ततः औपनिवेशीकरण को जन्म दिया जिसकी पीड़ा अब भी समाप्त नहीं हुई है। आधुनिक वैश्वीकरण के प्रेरणादाताओं का मानना है कि विकास की इस प्रक्रिया में न केवल व्यवसाय और व्यापार का भूमण्डलीकरण होगा अपितु विभिन्न देशों के मध्य सामाजिक आर्थिक विचारों के आदान–प्रदान से एक 'वैश्विक ग्राम' के रूप में क्रान्तिकारी बदलाव आयेगा जिससे गरीबी जैसे अभिशापों से छुटकारा मिलेगा और सम्पन्न एवं विपन्न देशों के जीवन स्तर में अन्तर कम हो जायेगा।

वैश्वीकरण के प्रक्रिया को गतिशील बनाने में बाजारोन्मुख अर्थतंत्र के साथ तकनीकि और सूचना क्रान्ति की भूमिका अधिक महत्वूपर्ण हो गई है पश्चिमी देश इन क्षेत्रों में अगुआई कर रहे हैं। पश्चिमी देशों द्वारा विकसित तकनीकि के आधार पर तीव्रगति से विकास सम्भव हुआ है। विकासशील देश भी उसी दिशा में बढ़ने के लिए आतूर हैं भारत अपनी लम्बी विरासत कृषि आधारित अर्थतंत्र, विशाल जनसंख्या, गरीबी अशिक्षा और बीमारी की भयंकर दशा के बावजूद उदारीकरण विदेशीकरण और नीजिकरण की ओर बढ़ता जा रहा है।

भारत में भूमण्डलीकरण की पृष्ठभूमि हजारों वर्ष पुरानी है लेकिन वर्तमान भूमण्डलीकरण से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। भारत में हजारों वर्ष पूर्व 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा को स्वीकार किया गया, लेकिन यह अवधारणा पूर्णतः सांस्कृतिक थी। इस अवधारणा के कारण जहाँ एक ओर स्वावलम्बंन भारतीय अर्थतंत्र का आधार बना, वहीं सादा जीवन और उच्च विचार के कारण जीवन में संतोष आधारित सुख चैन का प्राधान्य था। भारतीय जीवन शैली प्रकृति से सामनजस्य स्थापित कर सहज और शोषण मुक्त बनीं रही।

स्वतंत्रता के बाद देश के बंटवारे के बाद क्षेत्रिय विभेद की भावना उमड़ने लगी जिससे सामाजिक स्थिरता सबसे अधिक प्रभावित हुई। देश के नवनिर्माण के लिए प्रजातांत्रिय शासन व्यवस्था के अन्तर्गत योजनाबद्ध विकास की नीति अपनायी गई और पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से आर्थिक विकास को प्राथमिकता दी गई। सामाजिक जीवन में अपेक्षित बदलाव के लिए आर्थिक विकास को आधार मान लिया गया। 1990 तक के मिश्रित अर्थतंत्र के अनुभवों के बाद भारत द्वारा उदारीकरण, नीजिकरण और भूमण्डलीकरण की नीति को अपनाने का संकल्प लिया गया। उदारीकरण से तात्पर्य अर्थतंत्र के प्रावधानों को शिथिल करना है ताकि देशी–विदेशी पूंजीपति अपनी योजना अनुसार आर्थिक क्रिया कलाप सम्पादित कर सकें। नीजिकरण से आशय अर्थतंत्र के विभिन्न प्रखण्डों उद्योग ढांचागत सुविधाओं में सार्वजनिक क्षेत्र की साझेदारी को कम करना होता है। ताकि बंधनरहित विकास के मार्ग अपनाये जाऐं जिनसे अधिक लाभ की सम्भावना है।

भारत में उदारीकरण और भूमण्डलीकरण की नीति के सम्बन में प्रवासी भारतीय उद्योगपति **लार्ड स्वराज पाल** की टिप्पणी विशेष महत्वपूर्ण है। उद्यमिता को बढ़ावा देने वाले नियंत्रण मुक्त बाजार व्यवस्था में अटूट विश्वास रखने वाले इस उद्योगपति का मानना है कि भारत में नई आर्थिक नीति को अपेक्षित सावधानी और नैतिकता के साथ अंजाम देने की व्यवस्था नहीं की गई है। देखा गया है कि विश्व के कई देशों में सुधार के मामले में बहुत जल्दीबाजी की गई और उदारीकरण एवं नियंत्रण समाप्त करने की प्रक्रिया बगैर कानून बनाये अथवा नैतिक नियमों के बगैर अपनाई गई जो सर्वथा अनुचित है इसलिए वैसी गलती भारत को नहीं करनी चाहिए।

यह सच है कि उदारीकरण और भूमण्डलीकरण से नवाचारों को बढ़ावा मिलता है लेकिन नवाचारों का चुनाव परिस्थितिजन्य होना चाहिए ताकि सामाजिक और प्राकृतिक दुष्परिणामों से बचा जा सके। अतः भारत के लिए कौन सा नवाचार उपयुक्त है, इसका निर्णय राष्ट्रहित में होना चाहिए इसीलिए जैव तकनीकि को सावधानी से अपनाये जाने का सुझाव वैज्ञानिक देने लगे। भारत में उदारीकरण और भूमण्डलीकरण के क्षेत्रों का निर्धारण राष्ट्रहित को ध्यान में रखकर किया जाने लगा। हाल में प्रिंट मीडिया में विदेशी निवेश तेजी से बढ़ा है लेकिन सर्वाधिक निवेश उपभोक्ता सामग्री के क्षेत्र में हुआ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. द ब्लेक वैल डिक्शनरी ऑफ सोशियोलॉजी (1995) जे. एलन जॉनसन।
2. ह्यूमैन डेवलपमेंट रिपोर्ट – 1999 आक्सफोर्ड यूनिवार्सिटी प्रेस।
3. मानव संसाध विकास मंत्रालय (1992) राष्ट्रीय नीति योजना आयोग – पंचवर्षीय योजनायें।
4. डॉ0 मदन, जी0 आर0, परिवर्तन एवं विकास का समाजशास्त्र, पृ0 266।
5. योजना – हिन्दी मासिक पत्रिका (1992)
6. डॉ0 गुडमंड हर्नेस, निदेशक अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक योजना संस्थान, यूनेस्को।
7. दैनिक जागरण – हिन्दी दैनिक समाचार पत्र।